चोरी-छिपे लेख लिखता था 'आलोक'

मेरा आलोक

लीलादेवी मेहता

भास्कर संवाददाता, उज्जैन

आलोक (पत्रकार आलोक मेहता) 15-16 साल का रहा होगा। उन दिनों वह लगभग रोज ही शाम [illegible] लौटता था। एक बार उसके पिता ने मुझसे उसके देर से आने का कारण पूछा, मैं बता नहीं पाई लेकिन जब कारण पता चला तो मैं आश्चर्य में पड़ गई पर उसके पिता खुश थे। आलोक चोरी-छिपे लेख लिखता था और इंदौर जाकर उन्हें अखबारों तथा पत्र-पत्रिकाओं में देता था, वह भी अपने जेब खर्च में कंजूसी कर। मुझे आलोक के इस अजीब से शौक ने परेशानी में डाल दिया। मैं उसे डॉक्टर बनाना चाहती थी और वह बन रहा था किताबों का कीड़ा।

आलोक को हमेशा जेब खर्च के पैसे कम पड़ते थे लेकिन उसने कभी अतिरिक्त पैसों की मांग नहीं की। उसके पिता को 50 रुपए महीना वेतन मिलता था जिसमें आलोक और उसके छोटे भाई की पढ़ाई-लिखाई का खर्च और घर-गृहस्थी संभालना पड़ती। साल में एक या दो बार कपड़े और त्योहार या फिर खास दिनों में गेहूं की रोटी बनाती लेकिन आलोक ने कभी भी खाने-पीने और पहनने-ओढ़ने में नखरे नहीं दिखाए, न ही उसे किसी बात का शौक था। आलोक की तरफ से मैं इस मामले में पूरी तरह संतुष्ट थी कि वह भले ही डॉक्टर न बने लेकिन गलत रास्ते पर नहीं जाएगा। यह संतुष्टि उसके पिता की आंखों में दिखाई देती थी। फिक्र थी तो बस इतनी कि इतना सीधा-सादा लड़का बड़ा होकर इस जमाने में कैसे टिक पाएगा? आलोक का दुबलापन और उसकी बीमारियां भी मुझे अंदर ही अंदर सताए रहती थीं लेकिन वह बीमारी में भी न केवल अपने काम में लगा रहता बल्कि चुस्त दिखाई देने का प्रयास भी करता। जब वह चार साल का था तो एक सप्ताह तक बीमार रहा। उसे तो याद भी नहीं होगा कि उन्हेल के एक देवस्थान पर उसके लिए मान की थी। प्रकाश डॉक्टर की दवाइयां खाकर जब वह स्वस्थ होकर मुस्कुराया तो आंखों में आंसू तैर गए। उसकी वह हंसी आज भी याद है। अब तो वह मोटा हो गया है और जब भी आता है तो हर बार पहले से ज्यादा खुश और सुखी दिखाई देता है। यह तो नहीं कह सकती कि अब उसकी चिंता नहीं है क्योंकि मेरे लिए तो वह अभी भी नासमझ बच्चा ही है। भगवान करे हर मां की गोद में ऐसा आलोक खिले।

एक परिचय

नाम : आलोक मेहता

जन्म : 7 सितंबर 1952

शिक्षा : एमए (आधुनिक इतिहास) विक्रम विवि

लेखन : 13 किताबें, 7 हजार लेख

सम्मान : राष्ट्रीय स्तर के चार से ज्यादा सम्मान